|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 23. Juli | | | |
| **Heiliger Liborius Hochfest** | | | |
| Erste Lesung: Jes 52,7-10; Zweite Lesung: 1 Tim 6,13-16; Evangelium: Lk 22,24-30 | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 840 | | Sei gegrüßet, o Libori |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | | Herr Jesus |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 172 | | Gott in der Höh |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 1, 1-6 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 31, 1 | | Selig der Mensch |
|  | oder | |  |
|  | GL 543, 1+3 | | Wohl denen, die da wandeln |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 8 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *Geht zu allen Völkern,* | | |
|  | *und macht alle Menschen zu meinen Jüngern.* | | |
|  | *Ich bin bei euch alle Tage bis zum Ende der Welt.* | | |
|  | **oder** | | |
|  | *Der Herr hat mich gesandt,* | | |
|  | *den Armen die Frohe Botschaft zu bringen* | | |
|  | *und den Gefangenen die Freiheit zu verkünden.* | | |
|  |  |  | |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 702 | Herr, was im Alten Bunde | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 380, 2+3 | Alles, was dich preisen kann | |
|  |  |  | |
| Agnus Dei: | GL 139 | Lamm Gottes | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 405, 1-3 | Nun danket alle Gott | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 833 | Zu dir schick ich mein Gebet | |
|  | GL 841 | Großer Gott, in deinen Freunden | |
|  | GL 842 | Du großer Hirt und Gottesmann | |
|  |  |  | |